गद्य काव्य का उद्भव और विकास -

गद्य काव्य का प्रथम रूप हम यजुर्वेद की संहिताओं में मिलता है। कृष्ण यजुर्वेद की तैत्तिरीय, काठक और मैत्रायणी संहिताएँ अधिकांश गद्यात्मक हैं। शुक्ल यजुर्वेद के भी कुछ अध्याय (२५ एवं २९) पूर्णतः गद्य में हैं। अन्य अध्यायों में भी बहुत से गद्य मंत्र हैं। अथर्ववेद के कई सूक्त (जैसे 4/39; 5/6, 9, 10, 16 24; 6/46; काण्ड 15 एवं 16 आदि) गद्यात्मक है। मंत्रात्मक गद्य में वाक्यों का लाघव, भाव की स्पष्टता तथा वाक्यालंकार रूपी निपातों का अभाव विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं - जैसे - "तद् यस्यैवं विद्वान् व्रात्य एको शत्रिमतिथि गृहे वसति ॥१॥ ये पृथिव्यां पुण्यांलोकास्तानेव तेनाव रुन्धे ॥२॥ (अथर्व० 15-13,1-2)

संहितेतर वैदिक गद्य में भाषा तो यथापूर्व सरल थी किन्तु वाक्यालंकार के रूप में नु, ह, वै, उ इत्यादि निपातों का प्रचुर प्रयोग होने लगा। ब्राह्मण और आरण्यक इस विशिष्टता से युक्त हैं (ये पूर्णतः गद्य में हैं।) ऐतरेय ब्राह्मण के हरिश्चन्द्रोपाख्यान का गद्य जिसमें निपातों का प्रयोग है किन्तु भाषा प्राञ्जल तथा सहज है - 'तस्य ह दन्ता जज्ञिरे।

तैत्तिरीयोपनिषद् के इस संदर्भ में - 'भृगुर्वै वारुणिः वरुणं पितरमुपससार - अधीहि भगवो ब्रह्मेति। तस्मा एतत् प्रोवाच - अन्नं प्राणं चक्षुः श्रोत्रं मनो वाचमिति।' भाषा की तथा प्रवाहमयता देखी जा सकती है।

इस उपनिषद् के शान्तिपाठ में भी वाक्य-विन्यास की सरलता तथा भाव-गाम्भीर्य अनुपम है - 'नमो ब्रह्मणे, नमस्ते वायो। त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि, त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि।

निरुक्त में विषय-वस्तु का स्पष्टीकरण कहीं सूत्र-शैली में है तो कहीं भाष्य शैली में - भावप्रधानमाख्यातं सत्वप्रधानानि नामानि।'

प्रायः २०० ई० पू० में तीन प्रकार के गद्य प्रचार में थे। पौराणिक गद्य का प्रयोग प्राचीन आख्यानों, सृष्टि विषयक वृत्तान्तों तथा अन्य पौराणिक विषयों के निरूपण के लिए किया गया था। आगे चलकर यही गद्य महाभारत, भागवतपुराण, विष्णुपुराण आदि में संकलित हुआ।

शास्त्रीय गद्य की आधारशिला एक प्रकार से निरुक्त में रखी जा चुकी थी। दर्शन शास्त्रों के सूत्र, पतंजलि के महाभाष्य की भाषा, शबरस्वामी का शाबर भाष्य, शंकराचार्य का ब्रह्मसूत्र पर शारीरक भाष्य इत्यादि उत्कृष्ट गद्य के रूप हैं।

साहित्यिक-गद्य के प्रयोग का अनुमान कात्यायन और पतञ्जलि द्वारा दी गई सूचनाओं से होता है। दोनों वैयाकरणों ने ऐतिहासिक गद्यकाव्य के रूप में आख्यायिकाओं के अस्तित्व को बताया है। पतंजलि ने वासवदत्ता, सुमनोत्तरा तथा भैमरथी का नाम दिया।

निश्चित रूप से साहित्यिक गद्य का स्पष्ट उदाहरण अभिलेखों से प्राप्त होता है। इस दृष्टि से रुद्रदामन् का गिरिनार अभिलेख (150 ई०) तथा हरिषेणकृत समुद्रगुप्त-प्रशस्ति (प्रयाग स्तम्भलेख 360 ई०) विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

साहित्यिक-गद्य का विकासशील रूप दण्डी, बाण या सुबन्धु की रचनाओं में प्राप्त होता है। संस्कृत-गद्यकाव्य मुख्य रूप से कथा और आख्यायिका दो भागों में बँटा हुआ है। ऐतिहासिक विषय पर आख्यायिका एवं पूर्णतः काल्पनिक विषय पर कथा आश्रित है। कथा का विभाजन नहीं होता आख्यायिका उच्छ्वासों या निःश्वासों में विभक्त होती है। कथा में मुख्य कथा को लाने के लिए दूसरी कथा से आरंभ किया जाता है, आख्यायिका में कवि अपना वृत्तान्त देकर मुख्य कथा आरंभ करता है।

Contd.

Uma Pathak
Deptt. of Sanskrit
B.A. II + I yr